प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

संबोधि ग्रंथ पर प्रवचन

सत्य अनंत है – आचार्य महाप्रज्ञ

सरदारशहर 30 अप्रैल।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जेन धर्म की गीता के तौर पर चर्चित संबोधि ग्रंथ पर प्रवचन करते हुए कहा कि सत्य अनंत है। केवली के सिवाय कोई भी व्यक्ति पूर्ण सत्य को जानने वाला नहीं हुआ है। सत्य की सम्पूर्ण पर्यायों की व्याख्या एक समय में कर पाना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि दुःख है यह सत्य है। जन्म, जरा, बुढ़ापा, रोग, मृत्यु यह सारे दुःख है। भारतीय दर्शन में दो परम्परा है – एक दुःख है। भारतीय दर्शन में दो परम्परा है – एक दुःख की दूसरी सुख की। श्रमण परम्परा दुःख को मानरता है। आज अनेक प्रकार की बीमारियां है। उनमें शुगर सब बीमारियों को जन्म देने वाली है।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि दुःख के समय कुछ व्यक्ति प्रसन्न रहते हैं और कुछ विषाद में चले जाते हैं। प्रसन्नता और विषाद में कर्मवाद का बड़ा योग होता है। हमें कर्मवाद और परिस्थितिवाद दानों पर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब मोह कर्म का विपाक होता है तो लड़ाई झगड़े होते हैं। जो भोगवाद, सुविधावाद में रहता है उसके लिए कष्टों में भी प्रफुल्लित रहना कठिन काम है। आचार्य प्रवर ने कहा कि सत्य पर असत्य का आवरण आ जाता है। जिससे लोग सत्य को पह0चान नहीं पाते हैं हमें वास्तविक सत्य को पहचानने का प्रयास करना चाहिए।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि साधना के लिए शरीर स्वस्थ रहे यह जरूरी है। और शरीर को चलाने के लिए आहार आवश्यक है। साधन को परिमित और कल्पनीय आहार, ग्रहण करना चाहिए। जैन मुनि जहां मांसाहार का प्रयोग होता है और मुनि के लिए तैयार किया होता है वह आहार ग्रहण नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि खाने का संयम होता है तो साधनरा अच्छी होती है और स्वास्थ्य की आराधना भी सम्यक् तरीके से हो सकती है। खासकर ारीर को खराब करना समझदारी का काम नहीं है।

युवाचार्यप्रवर ने कहा कि जो स्वयं से ज्यादा गुण सम्पन्न है अथवा समगुणों वाला है उसे सहायक बनाना चाहिए। कुशल व्यक्ति सहायक होने से जीवन उन्नत बन सकता है। उन्होंने साधक के लिए एकांत स्थान, सुपाच्य भोजन और ध्यान के अभ्यास को जरूरी बताया।

प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर 21 से

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 21 मई से 30 मई तक राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया जायेगा। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित इस शिविर में सम्पूर्ण देश से 13 वर्ष से लेकर 18 वर्ष तक के बालक बालिकाएं भाग लेंगे। भावी पीढी देश की कर्णधार है। इसको संस्कारी बनाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस शिविर में संस्कार निर्माण एवं व्यक्तित्व निर्माण पर विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा। विभिन्न विशेषज्ञ साधु–साध्वियों के द्वारा मिलने वाले प्रशिक्षण के साथ ही युवाचार्य महाश्रमण के द्वारा भी प्रतिदिन विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। इस शिविर में सम्मलित होने वालों को पूर्व में सूचित कराना आवश्यक होगा।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)